Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
October, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

वैदिक आख्यान में महाभारत : एक दृष्टि

डॉ० जगतनारायण
माँ दुर्गानगर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

सारांश

आख्यानों की रचना-प्रक्रिया, शैली और वर्ण्य विषय इन आख्यानों को मानव-मन की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति सिद्ध करते हैं । वेदों में प्राप्त आख्यानों के विषय में आचार्य यास्क का कथन है कि - "स्वदृष्ट अर्थ (तत्त्व) को स्पष्ट करने के लिए उसे आख्यान से संयुक्त करने में ऋषि की प्रीति होती है । इससे स्पष्ट है कि मनोरम सम्प्रेषणार्थ कल्पित आख्यान, इतिहास अथवा आख्यायिका दृष्टार्थ से भिन्न होती हैं और दृष्ट अर्थ उनसे भिन्न होता है । अत: आख्यानों को वास्तविक इतिहास नहीं माना जा सकता । तो भी वे सार रूप में कहा जा सकता है कि आख्यान का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है । इनके बिना हमारा जीवन अधूरा है । अगर ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र, पुराण, उपनिषदों आदि ग्रंथों को मानव जीवन से निकाल दिया जाए तो इनके बिना मानव अंधा है । ज्ञानहीन है । जिसको पशु की संज्ञा दी जा सकती है ।ये हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं, वे आलौकिक कथाएं हैं । वे वैदिक आख्यान किसी आधिभौतिक, आधिदैविक या आध्यात्मिक तत्त्वों के प्रतीक हैं । आचार्य यास्क के इस रहस्योद्घाटन से स्पष्ट है कि वैदिक आख्यान गुह्य तत्त्वों के प्रतीक हैं; अत: उनके गर्भ में छिपे रहस्यों की खोज आवश्यक है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषियों ने भौतिक प्रकृति की घटनाओं को आंतरिक जीवन के व्यापारों के लिए प्रतीक रूप से स्वीकार कर लिया होगा । इस लिए उन्हें यथावत रूप में समझना आवश्यक नहीं परंतु अपने जीवन में इनकी शिक्षाओं को ढालना भी जरूरी है । नहीं तो मानवजाति के इतिहास में तमश: प्रवेश कर जायेगा जिससे आने वाली सन्तती अन्धकार के गर्त में अलोप हो जायेगी ।

वैदिक परम्परा में आख्यान/कथा/गाथा का बहुत महत्त्व है । वेद में जहाँ पुरुषार्थ की परिकल्पना की गई है, उस परम्परा को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु आख्यान/कथा का सहयोग लेकर साधारण जन मानस के मन: पटल पर शास्त्रीय ज्ञान को अंकित करने के लिए वैदिक मनीषियों ने अद्भुत प्रयास किया है । इस परम्परा में असंख्य कथा या कहानियाँ आती है । कथा/कहानी का एक रूप संवाद भी है । गुरु-परम्परा में शिष्य गुरु के समीप बैठकर ज्ञान व तत्त्व ज्ञान प्राप्त करते थे ।[1] उपनिषद् उसी परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । अगर समग्र दृष्टि से देखा जाए तो सम्पूर्ण वैदिक साहित्य आख्यान ही तो है । वर्तमान समय में साहित्य के भिन्न-भिन्न रूप अर्थात कहानी, एकांकी, कथा, रूपक (नाटक) इत्यादि सभी आख्यान का रूप ही है । वैदिक आख्यान परम्परा में उपनिषद्, पुराण, रामायण व महाभारत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । अगर यह कहें कि ये आख्यान भारत ज्ञान मनीषा की आत्मा है तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी । वैदिक ज्ञान या श्लोक/सूक्तों को आमजन की भाषा में प्रस्तुत करना ही आख्यान कहलाता है । यह साधारणजन के दिमाग में संजोकर रखने का साधनमात्र है । वेदों का गूढज्ञान कथा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर प्रवाह होता आ रहा है ।

रामायण में अनेक कथाएं आती हैं । यहां तक की प्रभु श्री राम पक्षियों, मृगों व वृक्षों से भी संवाद करते दिखाए गए हैं । लक्ष्मण व गूह के संवाद में कितनी गूढ़ ज्ञान की बात तुलसीदास जी द्वारा कही गई है । जब गूह माता कैकेयी को दोष देते हैं तो लक्ष्मण जी कहते है कि भाई कोई किसी को दु:ख या सुख नहीं दे सकता ये

अपने ही कर्मों का फल है जो मनुष्य इस लोक में भोगता है । श्रीराम जी को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाकर तुलसी दास ने अपने आख्यान में एक सभ्य समाज की कल्पना की है । जिसमें राजा का प्रजा के प्रति, परिवार के सभी सदस्यों का एक-दूसरे के प्रति व मानव का प्रकृति के प्रति, समाज के प्रति यहां तक कि पशु-पक्षियों के प्रति जो कर्त्तव्य बनता है । वह सभी कथा के माध्यम से बतलाया गया है ।

'आख्यान' शब्द आङ्पूर्वक ख्या धातु से ल्युट् प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न होता है । कुछ आचार्यों ने इसका अर्थ-वर्णन, वृत्तान्त, विवरण तथा कथा माना है ।[2] कतिपय कोशग्रन्थों में 'आख्यान' का अर्थ -बोलना, किसी पुरानी कहानी की और संकेत करना, कथा, कहानी, विशेष रूप से पौराणिक या काल्पनिक आदि किया गया है ।[3] साहित्य-दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने "आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः" कहकर इसका अर्थ पूर्ववृत्त कथन किया है ।[4] "आख्यायते इति आख्यानम्" इस निरुक्ति के अनुसार भी जो कुछ कहा जाए उसे आख्यान कहा जा सकता है, किन्तु यह शब्द प्रायः इतिहासादि के लिए प्रयुक्त होता है ।[5] शब्दकोश में भी आख्यान का अर्थ पूर्ववृत्त-कथन किया गया है । कथा के विभिन्न रूपों को स्वयं में समाहित कर अपेक्षित अर्थवत्ता का प्रतिपादित करने वाले शब्दों में आख्यान के अतिरिक्त 'उपाख्यान' शब्द भी प्रयुक्त होता है जो उप तथा आङपूवक 'ख्या' धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाकर बनता है यद्यपि 'आख्यान' तथा 'उपाख्यान' दोनों समानार्थक है ।

तथापि अनेक पुराणों में इनका विभेदात्मक प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। यथा -

आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः ।
पुराणसंहिता चक्रे पुराणार्थविशारदः ॥[6]

उक्त श्लोक की टीका करते हुए श्रीधर स्वामी ने एक श्लोक उद्धृत किया है, जो दोनों शब्दों के पार्थक्य की ओर संकेत करता हैं, यथा-

स्वयं दृष्टार्थकथनं प्राहुराख्यानकं बुधाः ।
श्रुतस्यार्थस्य कथनमुपाख्यानं प्रचक्षते ॥

इस श्लोक के अनुसार स्वयं दृष्ट अर्थ का कथन आख्यान है और श्रुत अर्थ का कथन उपाख्यान है ।[7] आचार्य बलदेव उपाध्याय ने तो कौटिल्य का मत उद्धृत करते हुए ऐसा उल्लेख किया है कि कौटिल्य ने इतिहास के अंतर्गत-पुराण, इतिवृत्त तथा आख्यायिका की गणना की हैं ।[8] इस प्रकार शब्द के विषय में उपलब्ध विभिन्न आचार्यों के मत से ऐसा ज्ञात होता है कि शाब्दिक दृष्टि से इसका तात्पर्य-कथन, पूर्ववृत्तोक्ति, वृतान्त आदि परंतु सम्प्रति यह शब्द पूर्ववृत्तान्त अथवा पौराणिक काल्पनिक कहानियों के लिए रूढ़ हो चुका है । अतः पूर्ववृत्तान्तों को ही आख्यान मानना चाहिए ।

वैदिक काल से ही मनुष्य अपनी भावनाओं और चेष्टाओं को अतिवृत्तात्मक रूप से अभिव्यक्त करने का अभ्यस्त रहा है । यद्यपि कहानी सुनना-सुनाना तत्कालीन युग के मनोविनोद के साधनों में प्रमुख साधन था, परंतु वेदों में 'आख्यान' पद का प्रयोग कहीं भी नहीं हुआ है। केवल 'चक्षिङ्' धातु के आख्यात्, अख्यत्, चख्यथुः आदि क्रिया रूपों का अपने मूलार्थ में प्रयोग दृष्टिगोचर होता है ।[9] वेदों में अनेक आख्यानों का वर्णन होते हुए भी उन्हें 'आख्यान' संज्ञा से कहीं अभिहित नहीं किया गया है । इसी प्रकार 'आख्यायिका' पद का भी प्रयोग नहीं मिलता, परंतु कथा शब्द का प्रयोग अवश्य हुआ, परंतु कहानी अर्थ में नहीं, प्रत्युत क्यों, कैसे, किस तरह आदि प्रश्नवाचक अर्थो में हुआ है । आचार्य यास्क ने भी कथा शब्द का कैसे अर्थ किया है ।[10] 'गाथा' शब्द का अवश्यमेव अनेकत्र हुआ है, परंतु इसका अर्थ भी कथा-कहानी न होकर धात्वर्थक स्तुति प्रशंसा है ।

सर्वप्रथम ब्राह्मण-ग्रंथों तथा आरण्यकों ने ही वैदिक संवादसूक्तों में उपलब्ध वर्णनों को आख्यान संज्ञा प्रदान की है । उसमें अनेक प्रसंगों में आख्यानम् "आख्यान-विद्" तथा आख्यायिका शब्दों का प्रयोग हुआ है । ऐतरेय-ब्राह्मण में "शुनः शेप" के प्रसंग में स्पष्टतः **"शौनः शेपम्"** आख्यानम् वाक्य द्वारा इन्हें आख्यान की संज्ञा दी है । शांखायन-श्रौतसूत्र में भी तदेतत् शौनः शेपम् "आख्यानम्" कहकर इन्हें आख्यान माना गया है । आचार्य यास्क ने भी निरुक्त में वेद-व्याख्या की एक शैली के रूप में ऐतिहासिकों के मत या आख्यान-विषयक मत का उल्लेख किया

है।[11] ऐतरेय-ब्राह्मण का शुन: शेप आख्यान होता नामक ऋत्विक् द्वारा राजसूय यज्ञ के प्रसंग में कहा गया है ।[12] ब्राह्मण-ग्रंथ से भी ज्ञात होता है कि अश्वमेध यज्ञ के प्रसंग में अश्व को स्वेच्छया भ्रमणार्थ छोड़ देने पर आख्यानों की जो शृंखला चलती है, उसे परिप्लव कहा जाता है । अत: सर्वप्रथम ब्राह्मण-ग्रंथों में आख्यान की सत्ता का प्रमाण उपलब्ध होता है। ब्राह्मण-ग्रंथों की भाँति आचार्य यास्क ने भी उषा, सूर्य सरमा-पणि, यम-यम आदि आख्यानात्मक सूक्तों के मंत्रों को उद्धृत करते हुए उन्हें आख्यान संज्ञा से अभिहित किया है ।[13] कतिपय सूत्र-ग्रंथों में भी इसी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग मिलता है । आचार्य शौनक ने वर्णन शैली के आधार पर मंत्रों के अनेक विभाग किये हैं, तद्यथा - स्तुति, निन्दा, प्रशंसा, उपदेश, विलाप आदि । उनमें पुरुरवा-उर्वशी सूक्त[14] को उन्होंने आख्यान की संज्ञा दी है और एकत्र इसे पवित्राख्यान बताया है । अन्यत्र उन्होंने परस्पर आह्लादनात्मक होने के कारण इसे आख्यान माना जाता है, जब कि यास्क इसे संवाद और शौनक इतिहास की संज्ञा देते हैं। कतिपय पाश्चात्य विद्वान् भी ऋग्वेदीय संवादसूक्तों को 'आख्यान' स्वीकार करते हैं । डॉ॰ ओल्डेन वर्ग के मत में ये सूक्त प्राचीन आख्यानों के अवशिष्ट रूप है ।

वैदिक वाङ्मय एवं वेदाङ्गों के पश्चात् लौकिक-संस्कृत साहित्य के अंतर्गत सर्वप्रथम 'रामायण' तथा महाभारत में कथा तत्त्वाप्रधान ऐतिहासिक घटनाओं और इतिवृत्तात्मक वर्णनों को आख्यान की संज्ञा से अभिहित किया गया है । रामायण में सम्पूर्ण राम कथा अन्तर्कथाओं, वृतान्तों और संदेश के लिए 'आख्यान' पद का प्रयोग हुआ है ।[15] महाभारत में नलोपाख्यान, रामोपाख्यान, आदि इसके स्पष्ट उदाहरण है । महाभारत में अनेक आख्यानों का वर्णन मिलता हैं । उद्योग पर्व में 'इन्द्रविजय' नामक प्रसिद्ध आख्यान है । आरण्यक-पर्व में यक्ष युधिष्ठिर-संवाद को आख्यान कहा गया है । इतना ही नहीं, वायुपुराण के अनुसार पुराण-संहिता की रचना अनेक आख्यानों, उपाख्यानों और गाथाओं के संग्रह से की गयी है । जैन आचार्य हेमचन्द्र ने काव्यानुशासन एक व्यक्ति द्वारा एक समय में कही जाने वाली कथा को 'आख्यान' माना है ।[16] अत: वाल्मीकि रामायण में सम्पूर्ण रामकथा को आख्यान संज्ञा से भी अभिहित किया गया है ।[17]

इसके अतिरिक्त मनुस्मृति में भी 'आख्यान' का प्रयोग प्राचीन कथा के लिए तथा 'गाथा' का प्रयोग प्राचीन किन्तु कल्पित कथा या कहावत के लिए हुआ है ।[18] मातंगलीला में 'उर्वशी अप्सरा और पुरुरवा' की कथा को आख्यान के रूप में भी उद्धृत किया गया है ।[19] पुराणों में सर्वप्रथम स्पष्टत: पुरातन या अलौकिक कथाओं को 'आख्यान' कहा गया और उनके ज्ञाता को 'आख्यान कुशल' विशेषण से सम्बोधित किया गया है ।[20] अत: उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि पुरातन वृत्तान्त अथवा अलौकिक कथाओं को आख्यान कहा जाता है।[21]

विभिन्न आचार्यों के मतानुसार वेद में अनेक महत्त्वपूर्ण आख्यान विद्यमान है । इनमें से कुछ तो वैयक्तिक देवता से सम्बद्ध है और कतिपय आख्यान सामूहिक घटना को लक्ष्य कर प्रवृत्त होते है ।[22] वस्तुत: इन आख्यानों के मूल रूप की अभिव्यक्ति 'ऋग्वेद' के मंत्रों में ही प्राप्त होती है । परवर्तीकाल में ये आख्यान परिस्थितियों के परिवर्तन से अथवा नवीन युग की नवीन कल्पना के प्रभाव से परिवर्तित और परिवृंहित होकर विकसित दृष्टिगोचर होते हैं । ऋग्वेद में लगभग 30 आख्यानों का स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है जिनमें से प्रख्यात आख्यान हैं- शुन: शेप,[23] सरमा-पणि[24] आदि । ऋग्वेद के अतिरिक्त शौनकीय बृहद्देवता में भी अनेक आख्यान हैं । दया द्विवेदी की 'नीतिमञ्जरी' तो बृहद्देवता के ही अनुशीलन का प्रतिफल है । इसका वैशिष्ट्य यह है कि ऋग्वेद में उपलब्ध समग्र आख्यानों और तज्जन्य उपदेशों का श्लाघ्य संकलन इस ग्रंथ में किया गया है । आख्यान तथा तदुपदेश का संग्रह एक ही श्लोक में किया गया है । तत्पश्चात् कात्यायनीय 'ऋक्सर्वानुक्रमणी' में सर्वाधिक आख्यान हैं, जिन्हें षड्गुरुशिष्य ने अपनी 'वेदार्थदीपिका' में स्पष्ट किया है । इसमें देवताओं, राजाओं तथा ऋषियों से सम्बद्ध अनेक आख्यान हैं । तदुपरान्त उपनिषदों में अनेक ऐसे आख्यान हैं जिनके अंतर्गत ब्रह्म, प्राण, सम्बन्धी दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है, यथा केनोपनिषद् के अंतर्गत यक्ष-उमा हैमवती आख्यान में ब्रह्मविषयक ज्ञान निहित है ।[25] ये वैदिक आख्यान रामायण एवं महाभारत में तथा पुराणों में बहुश: उपबृंहित हुए हैं ।

'महाभारत' जिसका पहला नाम 'जय' था आज भी मानव समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । यह एक ऐसी कथा है जिसने जिंदगी के सभी पक्षों को विस्तार से पेश किया है । कहा गया है कि महाभारत में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इस संसार में न हो और जो महाभारत में नहीं है वह इस जगत में विद्यमान ही नहीं है । वैदिक शिक्षाओं को महाभारत, पुराण, जिसे पंचम वेद भी कहा गया है, के माध्यम से दर्शाया गया है । ऐसी कौन-सी समस्या है जिसका निरूपन इस ग्रंथ में न किया गया हो । अगर यह कहें कि महाभारत मानव जीवन का दर्शन है तो ज्यादा उपयुक्त होगा । लौकिक-संस्कृति के अंतर्गत महाभारत के आख्यानों, वृतान्तों को दृष्टिगोचर किया जाए तो मानव जीवन उत्कृष्ट बन सकता है । द्रौपदी के द्वारा यह बतलाने की कोशिश की गई है कि एक शब्द जो बिना सोचे-समझे बोला गया था उसका कितना विनाशकारी प्रभाव पड़ा है । हमें शब्दों पर पूर्ण संयम रखना चाहिए । सामाजिक कुरीतियों का भी बड़े अच्छे व प्रभावशाली ढंग से आख्यान के माध्यम से दिखाया गया है । कौरवों-पाण्डवों की जन्म की कथा तथा भगवान कृष्ण की भूमिका अति प्रभावशाली आख्यान है । यहां तक भी कहा गया है कि महाभारत के आख्यान को लेकर वेदव्यास जी आध्यात्मिक जीवन की ओर कैसे अग्रसर हुआ जाए । पथ बतलाने की चेष्टा की गई है । यह भी कहा गया है कि प्रारब्ध कर्म वर्तमान जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं ।

महाभारत को पंचम वेद की संज्ञा दी गई है और इस ग्रंथ में स्पष्टत: वर्णित है कि जो महाभारत में है, वह अन्यत्र भी है और जो महाभारत में नहीं है, वह अन्यत्र भी नही है ।[26] अत: महाभारत के वैदिक साहित्य के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है । इसमें भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का इतिहास, उनकी कुछ परम्पराओं तथा तत्कालीन घटनाओं का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है । महाभारत में कौरवों-पाण्डवों के इतिहास से भी अधिक अनेक लोकप्रचलित कथाएँ, उपाख्यान आदि का वर्णन है । यही नहीं, इसमें अनेकत्र मुख्य-मुख्य पात्रों के मुख से ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन अथवा उपदेश मिलता है ।इन घटनाओं में वैदिक तथा अवैदिक दोनों प्रकार की घटनाएँ है । इनमें अनेक ऋषियों, राजाओं, देवताओं, राक्षसों तथा अन्य अनेक घटनाओं से सम्बद्ध आख्यान वर्णित है । सम्पूर्ण महाभारत का लगभग 4/5 भाग उपाख्यान रूप में है ।[27]

महाभारत में अनेक वैदिक आख्यान प्राप्त होते हैं। कतिपय छोटे आख्यानों का सविस्तार वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थ दुष्यन्त-शकुन्तला का आख्यान वैदिक साहित्य में नाममात्र ही उल्लेखित है ।[28] ऐतरेय-ब्राह्मण में केवल भरत, दौष्यन्ति का उल्लेख तथा उनके द्वारा किये गये यज्ञ का संक्षेप में वर्णन होता है ।[29] किन्तु महाभारत में यह आख्यान विस्तृत रूप से वर्णित है, यथा-दुष्यन्त तथा शकुन्तला का गान्धर्व विवाह, उनका एक-दूसरे से वियुक्त होना, पुनर्मिलन आदि घटनाओं का सविस्तार वर्णन मिलता है । एवमेव बहुत से विस्तृत वैदिक आख्यानों का संक्षिप्त रूप महाभारत में प्राप्त होता है । कतिपय वैदिक आख्यान तो ईषत् परिवर्तन के साथ महाभारत में यथावत् वर्णित हुए हैं, यथा मनु-मत्य से सम्बद्ध आख्यान ।[30] इस प्रकार अनेक वैदिक आख्यानों की विकास परम्परा महाभारत में दृष्टिगोचर होती है । जिससे भारतीय आख्यान-परम्परा में महाभारत की व्याप्ति स्वत: प्रमाणित हो जाती है । यहाँ देवताओं, ऋषियों, राजाओं, असुरों आदि से सम्बद्ध निम्नलिखित वैदिक आख्यान उपलब्ध होते हैं -

अज-एकपाद[31] इसके अतिरिक्त कुछ अन्य आख्यान भी महाभारत में दृष्टिगोचर होते हैं, जिनका सम्बन्ध वैदिक आख्यानों में अन्वेष्टव्य है ।वे आख्यान इस प्रकार हैं :-

इस प्रकार महाभारत में कुल लगभग 100 से भी अधिक वैदिक आख्यानों का वर्णन प्राप्त होता है, जिनका सूत्र तो वैदिक संहिताओं में अन्वेष्टव्य है । वे आख्यान इस प्रकार हैं :-

इस प्रकार महाभारत में कुल लगभग 100 से भी अधिक वैदिक आख्यानों का वर्णन प्राप्त होता है, जिनका सूत्र तो वैदिक संहिताओं में दृष्टिगोचर होता है, परन्तु आख्यान रूप में इनका उल्लेख ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र, उपनिषदों, निरुक्त, बृहदेवता आदि ग्रंथों में मिलता है । महाभारत में इन आख्यानों का कुछ परिवर्तित रूप एवं सविस्तार रूप प्राप्त होता है । इससे यह सर्वथा स्पष्ट है कि वैदिक वाङ्मय में अंकुरित आख्यानों की परम्परा महाभारत में आकर और विस्तृत एवं विकसित रूप में प्रतिपादित है; अत: आख्यान-परम्परा में महाभारत की व्याप्ति स्वत: सिद्ध है।

इन वैदिक आख्यानों के अतिरिक्त भी इसमें असंख्य आख्यान वर्णित है । जिनका पल्लवन परवर्ती साहित्य में अन्वेष्टव्य है ।

मानव जीवन या तत्त्वदर्शन हेतु इन आख्यानों का अपना महत्त्व है । आख्यानों की रचना-प्रक्रिया, शैली और वर्ण्य विषय इन आख्यानों को मानव-मन की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति सिद्ध करते हैं । वेदों में प्राप्त आख्यानों के विषय में आचार्य यास्क का कथन है कि - "स्वदृष्ट अर्थ (तत्त्व) को स्पष्ट करने के लिए उसे आख्यान से संयुक्त करने में ऋषि की प्रीति होती है ।[32] इससे स्पष्ट है कि मनोरम सम्प्रेषणार्थ कल्पित आख्यान, इतिहास अथवा आख्यायिका दृष्टार्थ से भिन्न होती हैं और दृष्ट अर्थ उनसे भिन्न होता है । अत: आख्यानों को वास्तविक इतिहास नहीं माना जा सकता । तो भी वे सार रूप में कहा जा सकता है कि आख्यान का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है । इनके बिना हमारा जीवन अधूरा है । अगर ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र, पुराण, उपनिषदों आदि ग्रंथों को मानव जीवन से निकाल दिया जाए तो इनके बिना मानव अंधा है । ज्ञानहीन है । जिसको पशु की संज्ञा दी जा सकती है ।ये हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं, वे आलौकिक कथाएं हैं । वे वैदिक आख्यान किसी आधिभौतिक, आधिदैविक या आध्यात्मिक तत्त्वों के प्रतीक हैं । आचार्य यास्क के इस रहस्योद्घाटन से स्पष्ट है कि वैदिक आख्यान गुह्य तत्त्वों के प्रतीक हैं; अत: उनके गर्भ में छिपे रहस्यों की खोज आवश्यक है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषियों ने भौतिक प्रकृति की घटनाओं को आंतरिक जीवन के व्यापारों के लिए प्रतीक रूप से स्वीकार कर लिया होगा । इस लिए उन्हें यथावत रूप में समझना आवश्यक नहीं परंतु अपने जीवन में इनकी शिक्षाओं को ढालना भीा जरूरी है । नहीं तो मानवजाति के इतिहास में तमश: प्रवेश कर जायेगा जिससे आने वाली सन्तती अन्धकार के गर्त में अलोप हो जायेगी।

संदर्भ :

1. याज्ञवल्क्यशिक्षा, 2.103
2. कपूर, डॉ॰ बदरीनाथ शब्द परिवार कोष, पृ॰ 28
3. संस्कृत-हिन्दी-कोश, शब्दकल्पद्रुम प्रथम भाग, पृ॰ 139
4. साहित्यदर्पण, षष्ठ परिच्छेद, पृ॰ 212
5. वाचस्पत्यम्, भाग-2, पृ॰ 1347
6. वायुपुराण
7. उपाध्याय, बलदेव वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ॰ 262
8. ऋ॰, 4.2.18, 7.60.3, 8.25.7, 4.14.1, 7.70.4 (चख्यथु:)
9. तदेव, 1.42.7, 1.54.1, 8.8.4; 1.185.1, 4.3.5, यजु॰ 2.32, 17.18
10. निरु॰, 9.30
11. ऋ॰, 1.167.6, 1.7.1, निघ॰ 1.11
12. ऐत॰ ब्रा॰, 3.25, शत॰ ब्रा॰, 13.4.3.2
13. निरु॰, 5.21, 11.25
14. ऋ॰ 10.95
15. वाल्मीकि, रा॰ युद्ध॰, 128.121, 131.28 उत्तर, 95.26, बाल, 4.26 ।
16. काव्यानुशा, आख्यानकसंज्ञां तल्लभते यदभिनयन् पठन् गायन् ग्रन्थिक: एक: कथयति गोवन्दवद् अवहिते सदसि ॥
17. वाल्मी॰ रा॰ बाल॰ 0,426 : तदेव, युद्ध 131-122
18. मनु॰ 2.114-115; 9.42; 3.232 ।
19. मातंगली, 2-अप्सरा : पुरुरसं-चकमे, इत्याख्यानविद् आचक्षते ।
20. विष्णु॰ पु॰, 3.6.15

21. तदेव, 3.6.15; अग्नि पु॰ 16.17
22. द्रष्टव्य, उपाध्याय, बलदेव : वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ॰ 262
23. ऋ॰ 1.24, 25
24. ऋ॰ 10.108
25. केनोपनि॰, 3.1-12, 4.1-9
26. महाभा॰, आदि॰, 56.33 : यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वाचत्।
27. वे॰ वरदाचार्य, संस्कृत साहित्य का इतिहास, (अनु॰, डॉ॰ कपिलदेव द्विवेदी) पृ॰ 84
28. शत॰ ब्रा॰ 13.5.4.13, 13.5.4.11; ऐत॰ ब्रा॰ 8.23
29. ऐत॰ ब्रा॰ 8-23
30. तदेव, 1.8.1.1-6; महाभा॰ वन॰ 185
31. ऋ॰ 10.65.13
32. निरुक्त, 10.46